

Publication: City Bhaskar Date: 31 July 2025 Edition: Ahmedabad

Page: 01



અમદાવાદ-સિટીભાસ્કર 31-07-2025

PROUD MOMENT) લુપ્તકલાનેજીવિતકરાઈ

EDII ની પહેલને GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ 'હસ્તકલા સેતુ'યોજનાને એવોર્ડ



ગાંધીનગર: ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કર્મિશનરેટ અને EDIIની 'હસ્તકલા સેતુ' યોજનાને 'GI એક્સેલન્સ એવોર્ડઃ ગુજરાત ચેપ્ટર' એનાયત થયો. હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા અને GIમાં ઉત્કષ્ટતા બદલ આ એવોર્ડ મળ્યો છે.

એવોર્ડ 'આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો' ટાઈટલ અંતર્ગત આયોજિત કોન્ફરન્સમાં અપાયો હતો. આ પ્રોજેક્ટે આર્થિક પરિણામો ઉપરાંત, યુથમાં પરંપરાગત હસ્તકલામાં ફરી અવેરનેસ જાગૃત કરી, લુપ્ત થતી કલાને ફરી જીવિત કરી છે.

યોજના વિશે વિશેષ

સ્ટક્ચર્ડ ટેનિંગ, બ્રાન્ડિંગ સપોર્ટ, ડિજિટલ ફેન્ડફોલ્ડિંગ સાથે EDIIએ 11હજારથી વધુ કારીગરોને ઇન્ફોર્મલ સેટઅપમાંથી કોર્મલ એન્ટરપ્રાઈઝમાં કેરવ્યાં છે. યોજનાની શ3આત સપ્ટેમ્બરમાં થઈ હતી. ત્યારથી, આ પ્રોજેક્ટ ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં વિસ્તર્યો છે,જેમાં 34,000થી વધુ કારીગરો જોડાયા છે. પહેલ હેઠળ, કારીગર ઈ-કોમર્સ પ્લેટકોર્મ પર જોડાયા છે.



Publication: Amrit India Date: 31 July 2025 Edition: Delhi

Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

हस्तकला सेत् अहमदाबाद। योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर ग्रामीण एवं उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है. को जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के और भौगोलिक प्रचार-प्रसार संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ युनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अद्री अग्रवाल

ने कहा गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों में सफल बनाने का भी रहा है। जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है।

हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप सेट ईडीआईआई – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढा रहे हैं।

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है।



Publication: Vir Arjun Date: 31 July 2025 Edition: Delhi Page: 11

हस्तकला सेतु योजना को जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

हस्तकला सेत् योजना, जो कि गुजरात सरकार के कटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान . अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड -गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार कांग्रेस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया. जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेत् योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपुर्ण भूमिका निभा रही है।



Publication: Dainik Savera Times

Date: 31 July 2025 Edition: Delhi Page: 15

हस्तकला सेतु योजना को जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड

सवेरा न्यूज/ कास.

नई दिल्ली, 30 जुलाई: गुजरात सरकार की हस्तकला सेतु योजना को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। इस योजना को कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय द्वारा प्रारंभ किया गया और ईडीआईआई द्वारा संचालित किया जा रहा है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार, जीआई टैगिंग और शिल्पकारों को सशक्त बनाने में उत्कृष्ट योगदान के लिए मिला।

योजना के तहत अब तक 34 हजार से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाकर उन्हें डिजाइन, ब्रांडिंग और डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में सहयोग दिया गया है। यह पुरस्कार 18 जुलाई को आयोजित एक जीआई सम्मेलन में प्रदान किया गया।



Publication: Badri Vishal Date: 31 July 2025 Edition: Dehradun

Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

देहरादून। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य

से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिजाइन और बाजार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सिक्रय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिजाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।



Publication: Devpath Date: 31 July 2025 Edition: Dehradun

Page: 04

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जी आईएक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

देहरादून (नि०स०)। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगआयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान ,अहमदाबाद द्वाराकार्यान्वित किया जा रहा है, को जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर 'से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों | में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सिक्रय रूप से कार्य कर रही है।



Publication: Jan Bharat Mail

Date: 31 July 2025 Edition: Dehradun

Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जी आई एक्सीलेंस अवार्ड मिला

देहरादून, संवाददाता। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड-गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है।

यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सिक्रय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते



हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है।

संरचित प्रशिक्षण मॉडयल, डिजाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौप-चारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अद्री अग्रवाल (IAS) ने कहा गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं।

हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है।

हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप से ईंडीआईआई – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। ईंडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा-हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें।



Publication: Veer Arjun Date: 31 July 2025 Edition: Dehradun

Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को प्रचार और टैगिंग के लिए जीआईं एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

वीर अर्जुन संवाददाता देहरादून। हस्तकला सेत् योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान. अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया. जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त

रूप से किया गया था। यह सम्मान

गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं

के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ

आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेत् योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के प्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल. डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सिंग्य रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से

अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11.000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मुल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त अर्द्रा अग्रवाल ने कहा: ठऋडूह्रद्व की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं।



Publication: Sandesh Date: 30 July 2025 Edition: Online

Link: https://sandesh.com/gujarat/news/ahmedabad/gujarat-news-hastaka-setu-yojana-honored-with-gi-

excellence-award

ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટની પહેલ અને એન્ટરપ્રેન્યોરશિપ ડેવલપમેન્ટ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ઇન્ડિયા અમદાવાદ દ્વારા અમલમાં મુકાયેલી હસ્તકલા સેતુ યોજનાને હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને જિઓગ્રાફિકલ ટેગિંગમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ 'GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ - ગુજરાત યેપ્ટર'થી સન્માનિત કરવામાં આવી છે.આ પુરસ્કાર 18 જુલાઇ 2025 ના રોજ બૌદ્ધિક સંપદા પ્રતિભા શોધ પરીક્ષા અને ગુજરાત નેશનલ લો યુનિવર્સિટી દ્વારા 'આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો આયોજિત કોન્ફરન્સ દરમિયાન આપવામાં આવ્યો હતો.

આ પ્રોજેક્ટ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત

સપ્ટેમ્બર 2020માં છ જિલ્લાઓમાં તેની શરુઆત થઈ ત્યારથી આ પ્રોજેક્ટ 34,000થી વધુ કારીગરો સુધી પહોંચવાની સાથે ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત છે. સંરચિત ટ્રેનિંગ મોડ્યુલ ડિઝાઇનમાં સુધારો કરવા માટેના પગલાંઓ બ્રાન્ડિંગ સંબંધિત માર્ગદર્શન અને ડિજિટલ માર્કેટિંગ હેન્ડહોલ્ડિંગ દ્વારા, EDII એ 11000થી વધુ કારીગરોને તેમનો શોખને વેપારમાં બદલવામાં મદદ કરી છે.વધતી જતી સંખ્યામાં કારીગરોને જિઓગ્રાફિકલ ઈન્ડિકેશન (GI)ના માળખા હેઠળ તેમના ઉત્પાદનોની નોંધણી કરવામાં પણ મદદ કરવામાં આવી છે. જેનાથી તેઓ તેમની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક મુલ્ય મેળવી શકે અને તેનું રક્ષણ કરી શકે છે.

GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે

આ ઉપલબ્ધિ પર વાત કરતા ગુજરાત સરકારના કોટેજ અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના સચિવ અને કમિશનર આર્દ્રા અગ્રવાલ (IAS)એ કહ્યું,"ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલા આપણા લોકો અને સમુદાયોની ઓળખમાં ઊંડા મૂળ ધરાવે છે.હસ્તકલા સેતુ યોજના દ્વારા,અમે આ પરંપરાઓનું સંરક્ષણ કરવાની સાથે આજના વિકસતા બજારોમાં કારીગરોને આગળ આવવા માટે પણ સક્ષમ બનાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે.GI એકસેવન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે.તે કારીગર-સંચાલિત વિકાસ પ્રત્યે સરકારની પ્રતિબધ્દ્રતાની પુષ્ટિ કરે છે.અમે કારીગરો, માર્ગદર્શકો અને EDII જેવા ભાગીદારોની,અમારા સપનાને સાકાર કરવામાં અમારી મદદ કરવા બદલ પ્રશંસા કરીએ છીએ.

આ સફર પર યાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ

EDII ના ડાયરેક્ટર જનરલ ડૉ.સુનિલ શુક્લાએ જણાવ્યું હતું કે, "હસ્તકલા સેતુ યોજના કારીગરોના વાસ્તવિક જીવન સાથે તેના મજબૂત જોડાણના કારણે તેમના જીવનમાં ફરક લઇ આવે છે. તે તેમને માત્ર તેમની કુશળતા સુધારવામાં જ નહીં, પણ તેમના વારસાનું સંરક્ષણ કેવી રીતે કરવું, ઉદ્યોગસાહસિક ક્ષમતાઓ અને ડિજિટલ સાધનોનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરવો અને એક વેપારી તરીકે વિકાસ કેવી રીતે કરવો તે સમજવામાં પણ મદદ કરે છે.EDII ખાતરી કરીને કે આ કારીગરો ફક્ત તેમની કારીગરીનું રક્ષણ જ નહીં પરંતુ ઉજ્જવળ ભવિષ્યનું નિર્માણ પણ કરે, અમને તેમની સાથે આ સફર પર યાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ.

કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ સુધારો દર્શાવે છે

આ પ્રોજેક્ટનો Gા ઘટક સ્થાનિક અને વૈશ્વિક બજારોમાં ટાંગાલિયા, રોગન કલા, કચ્છ ભરતકામ અને માતા ની પયેડી જેવી સ્થાનિક હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા અને ઉચ્ચ-મૂલ્યવાળી યીજવસ્તુઓ તરીકે ઓળખ આપવામાં ખુબ જ અસરકારક રહ્યો છે.આ પ્રોજેક્ટ ઇ-કોમર્સ ઓનબોર્ડિંગ, એક્સહિબીશન અને કારીગરો માટે તૈયાર કરાયેલા વિશિષ્ટ પ્લેટફોર્મ દ્વારા બજાર સુધી પહોંયવામાં મદદ કરે છે. પરિણામે, સમર્થિત કારીગરોએ સામૂહિક રીતે ₹100.10 કરોડથી વધુની આવક ઉભી કરી છે, જે કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ સુધારો દર્શવિ છે.



Publication: Navjeevan Express

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: https://navjeevanexpress.com/hastkala-setu-yojana-wins-gi-excellence-award-gujarat-chapter-for-

promotion-of-handicrafts/

 Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans

 The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets

NE FEATURES BUREAU

AHMEDABAD, JULY 30

Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award – Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.



Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods



Publication: khabarpatri Date: 31 July 2025 Edition: Online

કરીએ છીએ.

Link: https://khabarpatri.com/hastakala-setu-yojana-received-gi-excellence-award-for-promoting-

handicrafts-and-tagging-gujarat-chapter/

અમદાવાદ: ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટ (CCRI) ની પહેલ અને એન્ટરપ્રેન્યોરશિપ ડેવલપમેન્ટ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ઇન્ડિયા (ઇડીઆઇઆઇ), અમદાવાદ દ્વારા અમલમાં મુકાયેલી હસ્તકલા સેતુ યોજનાને હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને જિઓગ્રાફિકલ (GI) ટેગિંગમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ એક્સેલન્સ એવોર્ડ – ગુજરાત ચેપ્ટરથી સન્માનિત કરવામાં આવી છે. આ પુરસ્કાર 18 જુલાઇ 2025 ના રોજ બૌદ્ધિક સંપદા પ્રતિભા શોધ પરીક્ષા અને ગુજરાત નેશનલ લો યુનિવર્સિટી દ્વારા આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે Gાનો લાભ લેવો' આયોજિત કોન્ફરન્સ દરમિયાન આપવામાં આવ્યો હતો.

આ સન્માન ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા, લાંબા ગાળા માટે આજીવિકા મેળવવા માટે કારીગરોને સમર્થન આપવા અને આજના વિકસતા બજારોમાં નવી તકો શોધવાની સાથે તેમની અનન્ય કુશળતાને સુરક્ષિત રાખવામાં મદદ કરવા માટે પ્રોજેક્ટની વર્તમાન પ્રતિબદ્ધતાને પ્રકાશિત કરે છે.

ગુજરાતના હેન્ડલુમ અને હાન્ડીક્રાફ્ટ ક્ષેત્રોને પુનર્જીવિત કરવા માટે એક વ્યાપક કાર્યક્રમ તરીકે અમલમાં મુકવામાં આવેલ હસ્તકલા સેતુ યોજના, ગુજરાતના ગ્રામીણ અને કુટીર ઉદ્યોગોને મજબૂત બનાવવા માટે એક ઉદ્યોગસાહસિક સમુદાય વિકસાવવામાં મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા ભજવી રહી છે. વધુમાં, તે ગ્રામીણ કારીગરો માટે કુશળતા, ડિઝાઇન અને બજાર સાથે જોડાણ સ્થાપિત કરવા માટે સિક્રયપણે કામ કરી રહી છે.

સપ્ટેમ્બર 2020માં છ જિલ્લાઓમાં તેની શરૂઆત થઈ ત્યારથી, આ પ્રોજેક્ટ 34,000 થી વધુ કારીગરો સુધી પહોંચવાની સાથે ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત છે. સંરચિત ટ્રેનિંગ મોક્યુલ, ડિઝાઇનમાં સુધારો કરવા માટેના પગલાંઓ, બ્રાન્ડિંગ સંબંધિત માર્ગદર્શન અને ડિજિટલ માર્કેટિંગ હેન્ડહોલ્ડિંગ દ્વારા, EDII એ 11,000 થી વધુ કારીગરોને તેમનો શોખને વેપારમાં બદલવામાં મદદ કરી છે. વધતી જતી સંખ્યામાં કારીગરોને જિઓગ્રાફિકલ ઇન્ડિકેશન (GI) ના માળખા હેઠળ તેમના ઉત્પાદનોની નોંધણી કરવામાં પણ મદદ કરવામાં આવી છે, જેનાથી તેઓ તેમની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક મૂલ્ય મેળવી શકે અને તેનું રક્ષણ કરી શકે છે.

આ ઉપલબ્ધિ પર વાત કરતા, ગુજરાત સરકારના કોટેજ અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના સચિવ અને કમિશનર શ્રીમતી આર્દ્રા અગ્રવાલ (IAS) એ કહ્યું, ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલા આપણા લોકો અને સમુદાયોની ઓળખમાં ઊંડા મૂળ ધરાવે છે. હસ્તકલા સેતુ યોજના દ્વારા, અમે આ પરંપરાઓનું સંરક્ષણ કરવાની સાથે આજના વિકસતા બજારોમાં કારીગરોને આગળ આવવા માટે પણ સક્ષમ બનાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે. GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે; તે કારીગર-સંચાલિત વિકાસ પ્રત્યે સરકારની પ્રતિબદ્ધતાની પુષ્ટિ કરે છે. અમે કારીગરો, માર્ગદર્શકો અને EDII જેવા ભાગીદારોની, અમારા સપનાને સાકાર કરવામાં અમારી મદદ કરવા બદલ પ્રશંસા



EDII ના ડાયરેક્ટર જનરલ ડૉ. સુનિલ શુક્લાએ જણાવ્યું હતું કે, "હસ્તકલા સેતુ યોજના કારીગરોના વાસ્તવિક જીવન સાથે તેના મજબૂત જોડાણના કારણે તેમના જીવનમાં ફરક લઇ આવે છે. તે તેમને માત્ર તેમની કુશળતા સુધારવામાં જ નહીં, પણ તેમના વારસાનું સંરક્ષણ કેવી રીતે કરવું, ઉદ્યોગસાહસિક ક્ષમતાઓ અને ડિજિટલ સાધનોનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરવો અને એક વેપારી તરીકે વિકાસ કેવી રીતે કરવો તે સમજવામાં પણ મદદ કરે છે. ભૌગોલિક સંકેતો તેમના કામને બજારમાં તે ઓળખ અને સન્માન આપવામાં મોટી ભૂમિકા ભજવે છે જે તેને મળવી જોઈએ. EDII ખાતરી કરીને કે આ કારીગરો ફક્ત તેમની કારીગરીનું રક્ષણ જ નહીં પરંતુ ઉજ્જવળ ભવિષ્યનું નિર્માણ પણ કરે, અમને તેમની સાથે આ સફર પર ચાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ. આ પુરસ્કાર અમને આ મોડેલને વધુને વધુ લોકો સુધી લઇ જવા માટે પ્રોત્સાહિત કરે છે.

આ પ્રોજેક્ટનો GI ઘટક સ્થાનિક અને વૈશ્વિક બજારોમાં ટાંગાલિયા, રોગન કલા, કચ્છ ભરતકામ અને માતા ની પચેડી જેવી સ્થાનિક હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા અને ઉચ્ચ-મૂલ્યવાળી ચીજવસ્તુઓ તરીકે ઓળખ આપવામાં ખુબ જ અસરકારક રહ્યો છે. આ પ્રોજેક્ટ ઈ-કોમર્સ ઓનબોર્ડિંગ, એક્સહિબીશન અને કારીગરો માટે તૈયાર કરાયેલા વિશિષ્ટ પ્લેટફોર્મ દ્વારા બજાર સુધી પહોંચવામાં મદદ કરે છે. પરિણામે, સમર્થિત કારીગરોએ સામૂહિક રીતે ₹100.10 કરોડથી વધુની આવક ઉભી કરી છે, જે કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ સુધારો દર્શાવે છે.

હસ્તકલા સેતુ યોજનાએ ધીમે ધીમે લુપ્ત થતી પરંપરાગત હસ્તકલાને ફરી જીવિત કરવામાં મદદ કરી છે, યુવાનોને તેની સંસ્કૃતિ પર ગર્વ લેવા પ્રેરણા આપી છે, અને વિચારશીલ નીતિઓ અને નવીનતા દ્વારા કારીગરોને સમર્થન આપવામાં ગુજરાતને અગ્રેસર તરીકે સ્થાન આપ્યું છે. વાસ્તવિક જીવન પર કેન્દ્રિત સમર્થન સાથે, આ પ્રોજેક્ટ દર્શાવે છે કે સાંસ્કૃતિક વારસો હજારો કારીગરો માટે ગૌરવ, સન્માન અને લાંબા ગાળાની આજીવિકાનો સ્ત્રોત કેવી રીતે બની શકે છે.



Publication: Dailyhunt Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: https://m.dailyhunt.in/news/india/gujarati/khabarpatri-epaper-

 $\underline{kpatri/hastakalane+protsahan+aapava+badal+ane+teging+mate+hastakala+setu+yojanane+malyo+gi+eksel}$

ans+evord+gujarat+cheptar-newsid-n674711274?sm=Y

હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને ટેગિંગ માટે હસ્તકલા સેતુ યોજનાને મળ્યો GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ -ગુજરાત યેપ્ટર

19hr · 1 shares







અમદાવાદ: ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટ (CCRI) ની પહેલ અને એન્ટરપ્રેન્યોરશિપ ડેવલપમેન્ટ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ઇન્ડિયા (ઇડીઆઈઆઈ), અમદાવાદ દ્વારા અમલમાં મુકાયેલી હસ્તકલા સેતુ યોજનાને હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને જિઓગ્રાફિકલ (GI) ટેગિંગમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ એક્સેલન્સ એવોર્ડ - ગુજરાત યેપ્ટરથી સન્માનિત કરવામાં આવી છે

આ પુરસ્કાર 18 જુલાઈ 2025 ના રોજ બૌિધ્દ્રિક સંપદા પ્રતિભા શોધ પરીક્ષા અને ગુજરાત નેશનલ લો યુનિવર્સિટી દ્વારા આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો' આયોજિત કોન્ફરન્સ દરમિયાન આપવામાં આવ્યો હતો.



આ સન્માન ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા, લાંબા ગાળા માટે આજીવિકા મેળવવા માટે કારીગરોને સમર્થન આપવા અને આજના વિકસતા બજારોમાં નવી તકો શોધવાની સાથે તેમની અનન્ય કુશળતાને સુરક્ષિત રાખવામાં મદદ કરવા માટે પ્રોજેક્ટની વર્તમાન પ્રતિબદ્ધતાને પ્રકાશિત કરે છે. ગુજરાતના હેન્ડલુમ અને હાન્ડીક્રાફ્ટ ક્ષેત્રોને પુનર્જીવિત કરવા માટે એક વ્યાપક કાર્યક્રમ તરીકે અમલમાં મુકવામાં આવેલ હસ્તકલા સેતુ યોજના, ગુજરાતના ગ્રામીણ અને કુટીર ઉદ્યોગોને મજબૂત બનાવવા માટે એક ઉદ્યોગસાહસિક સમુદાય વિકસાવવામાં મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા ભજવી રહી છે. વધુમાં, તે ગ્રામીણ કારીગરો માટે કુશળતા, ડિઝાઇન અને બજાર સાથે જોડાણ સ્થાપિત કરવા માટે સિક્રયપણે કામ કરી રહી છે.



સપ્ટેમ્બર 2020માં છ જિલ્લાઓમાં તેની શરુઆત થઈ ત્યારથી, આ પ્રોજેક્ટ 34,000 થી વધુ કારીગરો સુધી પહોંચવાની સાથે ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત છે. સંરચિત ટ્રેનિંગ મોડ્યુલ, ડિઝાઇનમાં સુધારો કરવા માટેના પગલાંઓ, બ્રાન્ડિંગ સંબંધિત માર્ગદર્શન અને ડિજિટલ માર્કેટિંગ હેન્ડહોલ્ડિંગ દ્વારા, EDII એ 11,000 થી વધુ કારીગરોને તેમનો શોખને વેપારમાં બદલવામાં મદદ કરી છે. વધતી જતી સંખ્યામાં કારીગરોને જિઓગ્રાફિકલ ઈન્ડિકેશન (GI) ના માળખા હેઠળ તેમના ઉત્પાદનોની નોંધણી કરવામાં પણ મદદ કરવામાં આવી છે, જેનાથી તેઓ તેમની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સાંસ્ફૃતિક અને આર્થિક મૂલ્ય મેળવી શકે અને તેનું રક્ષણ કરી શકે છે.

આ ઉપલબ્ધિ પર વાત કરતા, ગુજરાત સરકારના કોટેજ અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના સચિવ અને કિમશનર શ્રીમતી આર્દ્રા અગ્રવાલ (IAS) એ કહ્યું, ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલા આપણા લોકો અને સમુદાયોની ઓળખમાં ઊંડા મૂળ ધરાવે છે. હસ્તકલા સેતુ યોજના દ્વારા, અમે આ પરંપરાઓનું સંરક્ષણ કરવાની સાથે આજના વિકસતા બજારોમાં કારીગરોને આગળ આવવા માટે પણ સક્ષમ બનાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે. GI

એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે; તે કારીગર-સંયાલિત વિકાસ પ્રત્યે સરકારની પ્રતિબદ્ધતાની પુષ્ટિ કરે છે. અમે કારીગરો, માર્ગદર્શકો અને EDII જેવા ભાગીદારોની, અમારા સપનાને સાકાર કરવામાં અમારી મદદ કરવા બદલ પ્રશંસા કરીએ છીએ.



EDII ના ડાયરેકટર જનરલ ડૉ. સુનિલ શુક્લાએ જણાવ્યું હતું કે, "હસ્તકલા સેતુ યોજના કારીગરોના વાસ્તવિક જીવન સાથે તેના મજબૂત જોડાણના કારણે તેમના જીવનમાં ફરક લઇ આવે છે. તે તેમને માત્ર તેમની કુશળતા સુધારવામાં જ નહીં, પણ તેમના વારસાનું સંરક્ષણ કેવી રીતે કરવું, ઉદ્યોગસાહસિક ક્ષમતાઓ અને ડિજિટલ સાધનોનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરવો અને એક વેપારી તરીકે વિકાસ કેવી રીતે કરવો તે સમજવામાં પણ મદદ કરે છે. ભૌગોલિક સંકેતો તેમના કામને બજારમાં તે ઓળખ અને સન્માન આપવામાં મોટી ભૂમિકા ભજવે છે જે તેને મળવી જોઈએ. EDII ખાતરી કરીને કે આ કારીગરો ફક્ત તેમની કારીગરીનું રક્ષણ જ નહીં પરંતુ ઉજ્જવળ ભવિષ્યનું નિર્માણ પણ કરે, અમને તેમની સાથે આ સફર પર યાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ. આ પુરસ્કાર અમને આ મોડેલને વધુને વધુ લોકો સુધી લઇ જવા માટે પ્રોત્સાહિત કરે છે. આ પ્રોજેક્ટનો Gા ઘટક સ્થાનિક અને વૈશ્વિક બજારોમાં ટાંગાલિયા, રોગન કલા કચ્છ ભરતકામ અને માતા ની પયેડી જેવી સ્થાનિક હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા અને ઉચ્ચ-મૂલ્યવાળી યીજવસ્તુઓ તરીકે ઓળખ આપવામાં ખુબ જ અસરકારક રહ્યો છે. આ પ્રોજેક્ટ ઇ-કોમર્સ ઓનબોર્ડિંગ. એક્સહિબીશન અને કારીગરો માટે તૈયાર કરાયેલા વિશિષ્ટ પ્લેટફોર્મ દ્વારા બજાર સુધી પહોંચવામાં મદદ કરે છે. પરિણામે, સમર્થિત કારીગરોએ સામૂહિક રીતે ₹100.10 કરોડથી વધુની આવક ઉભી કરી છે, જે કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ



સુધારો દશવિ છે.

હસ્તકલા સેતુ યોજનાએ ધીમે ધીમે લુત થતી પરંપરાગત હસ્તકલાને ફરી જીવિત કરવામાં મદદ કરી છે, યુવાનોને તેની સંસ્કૃતિ પર ગર્વ લેવા પ્રેરણા આપી છે, અને વિયારશીલ નીતિઓ અને નવીનતા દ્વારા કારીગરોને સમર્થન આપવામાં ગુજરાતને અગ્રેસર તરીકે સ્થાન આપ્યું છે. વાસ્તવિક જીવન પર કેન્દ્રિત સમર્થન સાથે, આ પ્રોજેક્ટ દર્શાવે છે કે સાંસ્કૃતિક વારસો હજારો કારીગરો માટે ગૌરવ, સન્માન અને લાંબા ગાળાની આજીવિકાનો સ્ત્રોત કેવી રીતે બની શકે છે.



Publication: Merouttrakhand

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: https://merouttrakhand.in/hastkala-setu-yojana-receives-gi-excellence-award-for-promotion-and-

tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter/

देहरादून। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तिशल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, तािक वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्री अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपिरक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"



ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बिल्क हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।



Publication: Uttarakhand Print Media

Date: 31 July 2025 **Edition:** Online

Link: https://uttarakhandprintmedia.com/archives/29169

देहरादून: हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, तािक वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।



इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्री अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरिक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।



हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।



Publication: Arihantsamachar

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: https://arihantsamachar.com/2025/07/30/hastkala-setu-yojana-receives-gi-excellence-award-for-

promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter/

देहरादून 30 जुलाई । हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"



ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तिवकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।" परियोजना का जी आई घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

बीवीहस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपिरक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह पिरयोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।



Publication: Swastik-mail

Date: 31 July 2025 **Edition:** Online

Link: https://www.swastik-mail.in/the-hastakala-setu-yojana-received-the-gi-excellence-award-for-

promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter/#google vignette

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं प्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तिशल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, तािक वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"



ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं – एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अप्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।



Publication: The Uttarakhand News

Date: 31 July 2025 **Edition:** Online

Link:https://theuttarakhandnews.in/%E0%A4%89%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%

A4%BE%E0%A4%96%E0%A4%82%E0%A4%A1/the-hastakala-setu-yojana-has-been-awarded-the-gia-

excellence-award-gujarat-chapter/

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तिशल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता



को दर्शाता है

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।



इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।



Publication: lavanyamail Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: https://lavanyamail.in/the-hastkala-setu-yojana-which-is-an-initiative-of-the-cottage-and-rural-industries-commissionerate-of-the-government-of-gujarat-was-awarded-the-excellence-award-gujarat-chapter/

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ युनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रॉडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मृत्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अब्र्रा अब्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।



Publication: BusinessNewsmatters

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of

Handicrafts - Business News Matters

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.



Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods



Publication: National biz news

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of

Handicrafts - National Biz News

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods.



Publication: Businesshour9

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of

Handicrafts - National Biz News

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods.



Publication: Businessnewsforprofit

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of

Handicrafts - Business News For Profit

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods



Publication: OnlineMediacafe

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of

Handicrafts

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.



Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.



Publication: Business Newsweek

Date: 31 July 2025 Edition: Online

Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of

Handicrafts - Business News Week

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

66

Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."



The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.



Publication: Siddhant Samachar

Date: 01 August 2025 Edition: Mumbai

Page: 02

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला



टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Eco-आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना राज्य के ग्रामीण और कृटीर उद्योगों

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात शिल्पकारों के लिए कौशल, डिजाइन सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग और बाजार से जुड़ाव की खाई पाटने आयुक्तालय (सीसीआरआई) की एक की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता रही है। सितंबर 2020 में छह जिलों से विकास संस्थान (ईडीआईआई), आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया है, और अब तक 34,000 से अधिक गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिजाइन हस्तक्षेप, (Geographical Indication - जीआई) ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को nomic Growth, Cultural Preserva- भौगोलिक संकेतक (जीआई) फ्रेमवर्क tion, and Global Recognition) के के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग दौरान प्रदान किया गया, जिसका प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी परीक्षा (Intellectual Property Talent) पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और Search Examination) और गुजरात आर्थिक मुल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अद्री अग्रवाल (आईएएस) ने कहा: "ग्जरात की पारंपरिक कलाएं तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए गहराई से रची-बसी है। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, गुजरात के हथकरघा और हस्तकला बिल्क शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य में सफल बनाने का भी रहा है। जीआई से विकसित की गई, हस्तकला सेतु एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो यह सरकार की शिल्पकार- केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण विशेष रूप से ईडीआईआई—की सराहना और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण साथ आगे बढ़ा रहे हैं।" ईडीआईआई आजीविका का साधन भी बन सकती है।

के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहाः "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल ट्र कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक (जीआई) उनके कार्य को बाजार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं - एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।" परियोजना का जीआई घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछंडी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाजारों में प्नःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाजार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामृहिक रूप से 100. 10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है। हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृ तिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अगणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान हजारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ



Publication: Canon Times **Date:** 01 August 2025

Edition: Bhopal Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

Canon Times, Bureau

31 जुलाई 2025, अहमदाबाद-हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के क्टीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'लडू एक्सीलेंस अवॉर्ड ङ्क गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication = GI) टैगिंग में उत्कष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैधिक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search E&amination) और गुजरात नेशनल लॉ युनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।



यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें, बदलते बाजारों में नए अबसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दशीं ही गुजरात के हथकराया और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकस्तित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और क्ट्रीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल. डिजाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सिक्रिय रूप से कार्य कर रहे है।सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हरसकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों की कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से

प्रशिक्षण मॉडयल, डिजाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सास्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अद्रो अग्रवाल (IAS) ने कहा- :गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है।



Publication: Dainik Aditya Bharat

Date: 01 August 2025

Edition: Bhopal

Page: 02

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार 🕨

गिंग के लिए GI एक्सीलेंर

एजेंसी • अहमदाबाद

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्तित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैंटर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तरिशल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication - GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया

गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस योगदान 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संस्थ्रण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का



संख्या और वैशिक्त प्रशिन्धा प्रशिन्धा प्रशिन्धा प्रशिन्धा प्रशिक्षण प्रशिन्धा प्रशिन्धा प्रशिन्धा प्रशिक्षण प्रशिन्धा प्रशिन्

प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निसंतर बदबी जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक करनाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मुख्य को पहचान और सुरक्षा सुनिध्चत कर स्वात हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं प्रामीण डवीग विभाग की सचिव एवं के

आयुक्त सुश्री अद्रां अग्रवाल (IAS) ने कहाः 'गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेंतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों में सफल बनाने का भी रहा है। GI एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों. मेंटर्स और साझेदारों विशेष रूप से EDII की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।" EDII के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: 'हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने बाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी बास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है।

GI घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है

परियोजना का Gi घटक विशेष रूप से प्रभावताली रहा है. क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगा करा, कर्कड कराई, से माना मी पड़ेडी जेसे पारपीक स्थानीय दिल्यों को सुरक्षित और क्या-मूच्य उत्पादी के क्या में देश और विदेश दोनों प्राज्यते में पुरस्कापित किया गया है। यह परियोजना है केलासित सेटकामों में एर ऑनवॉडिंग, एरहानियां, और विल्याकारों के लिए विशेष एर से तैयार किए गए प्लेटफामों के माध्यम से बाजा रहत पहरंग को भणवा तथार (कर्ष गए प्लटफाम क माध्यम से बाजार तक पूर्च को मणबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित रिलप्कारों ने सामृहिक रूप से १००.10 करोड़ से अधिक का राजस्य उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्मन्ट सुधार देखाने को मिला है।

भूमिका निभाई है



Publication: Manch Manthan

Date: 01 August 2025

Edition: Bhopal

Page: 01

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद हस्तकला सेत् योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII). अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' लड्ड एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैंप्टर ' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक (Geographical संकेतक Indication - GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और



वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बीदिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search E&amination) और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका

के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिजाइन और

बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह जिलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिजाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है.



Publication: Samay Jagat **Date:** 01 August 2025

Edition: Bhopal Page: 09

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

एजेंसी नई दिल्ली हस्तकला सेत् योजना, जो कि गुजरात सरकार के कटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्य के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग

में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात को पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दशांता है। गजरात के इथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पूनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेत् योजना एक समग्र कार्यऋम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिको तंत्र कं निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिजाइन और बाजार से जुडाव की खाई पाटने की दिशा में भी सिऋय रूप से कार्य कर रही



है। सितंबर 2020 में छह जिलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, ভিজাइন हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों अनौपचारिक प्रणाली निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फेमवर्क के तहत पंजीकत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मुल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अदी अग्रवाल (IAS) ने कहा गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-वसी हैं। हस्तकला सेत्

योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों में सफल बनाने का भी रहा है। GI एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों - विशेष रूप से EDII – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढा रहे हैं। EDII के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा- हस्तकला सेत् योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्क यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल ट्रस्य कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक (GI) उनके कार्य को बाजार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। EDII में हमें गर्व है कि हम इन

शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं - एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह प्रस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहंचाएं। परियोजना का GI घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है. क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया. रोगन कला, कच्छ कढाई, और माता नी पछेडी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मुल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाजारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमसं प्लेटफॉम्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मी के माध्यम से बाजार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामृहिक रूप से ?100.10 करोड से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है। हस्तकला सेत् योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पूनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दशां रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हजारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी वन सकती है।



Publication: Swadesh **Date:** 01 August 2025

Edition: Bhopal

Page: 10

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

एजेंसी, अहमदाबाद

हस्तकला सेतु योजना जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण इद्योग आयुक्तालय कीएक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार- प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और यैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोन परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ युनिवर्सिटी हारा संयुक्त रूप से किया गया था।



Publication: Hari Bhoomi Date: 02 August 2025 Edition: Bhopal

Page: 07

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यीन्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तिशल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरिक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



Publication: Aam Sabha Date: 02 August 2025 Edition: Bhopal

Page: 01

í

Ŧ

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड



आम सभा, अहमदाबाद। गुजरात सरकार की हस्तकला सेतु योजना को राज्य की पारंपरिक शिल्पकला के संरक्षण एवं तढ़ टैगिंग के माध्यम से शिल्पकारों को सशक्त बनाने के लिए तढ़ एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी और ढ़क्क्क्षस्थ द्वारा आयोजित सम्मेलन के दौरान प्रदान किया गया। योजना के अंतर्गत अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों को जोड़ा गया है और ?100 करोड़ से अधिक का कारोबार हुआ है। योजना का संचालन ष्टष्टऋह तथा कार्यान्वयन श्वष्ठढूढ़ द्वारा किया जा रहा है।



Publication: Sach Express **Date:** 02 August 2025

Edition: Bhopal Page: 06



हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआईएक्सीलेंस अवॉर्ड

सच प्रतिनिधि ॥ भोपाल

हस्तकला सेतु योजना जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



Publication: Fine Times **Date:** 03 August 2025

Edition: Bhopal

Page: 07

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए आ एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication- GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।



Publication: Fine Times **Date:** 03 August 2025

Edition: Bhopal

Page: 07

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication- GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ युनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।



Publication: Mp18news **Date:** 05 August 2025

Edition: Online

Link: https://mp18news.com/news.php?id=hastkala-setu-yojana-receives-gi-excellence-award-for-

promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter-568702

अहमदाबाद: हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैष्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication – GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search Examination) और गुजरात नेशनल लॉ युनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनीपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, तािक वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। GI एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से EDII — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"



Publication: Bharat Vichar

Date: 31 July 2025 Edition: Dehradun

Page: 06

हरतकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हरतशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं संरचित प्रशिक्षणमॉड्यूल, डिज़ाइन की शिल्पकार-केन्द्रित विकास ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबीर्डिंग, अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व ग्रामीण उद्योगआयुक्तालय की एक हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और

पहल है और जिसेभारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वाराकार्यान्वित किया जा रहा है, को जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड क्र गजरात चैप्टर से सम्मानित किया गया है। यह सम्मानहस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदानके लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिकसंरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभाखोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारासंयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक

है, और अब तक 34,000 से भी रहा है। जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड देश और विदेश दोनों बाज़ारों में

हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम प्रदर्शनियों,और शिल्पकारों के लिए विशेष करना सिखाया है और गुजरात को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में से ईडीआईआई ने 11,000 सेअधिक उन सभी शिल्पकारों मेंटर्स और रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के कोशिल्पकार—समर्थक नीतियों और समर्थनदेने, तथा उनकी विशिष्ट कला शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से साझेदारों – विशेष रूप से ईडीआईआई माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप 🗕 की सराहना करते हैं जो इस बनातीहै। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति में विकसित होने में सहायताकी है साथ दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढारहे हैं कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक स्तर परकेंद्रित सहयोग के साथ, यह इसपरियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों हैं।भौगोलिक संकेतक उनकेकार्य को रूप से ?100.10 करोड़ से अधिक परियोजना दशां रही है कि सांस्कृतिक को दर्शाता है गुजरात के हथकरघा को भौगोलिक संकेतक फेमवर्क के बाज़ार में वह पहचान और सम्मान काराजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी विरासत न केवल सम्मान और गर्व और हस्तकला क्षेत्रों को पूनर्जीवित तहत पंजीकृत कराने मेंसहयोग प्रदान दिलाने में अहम भूमिका निमाते हैं, आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने का खोत बनसकती है, बल्कि हजारों करने के उद्देश्य से विकसित की गई, किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर जिसके वे वास्तव में हकदार को मिला है। कटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के आर्थिक मुल्य की पहचान और सरक्षा हैं – एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरेविलप्त लिए उद्यमिता आधारितपारिस्थितिकी सुनिश्चित कर सकें इस उपलब्धि पर की रक्षाकरता है और साथ ही उनके तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका बोलते हुए गुजरात सरकार के कुटीर लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य निभा रही है। इसके साथ ही, यह एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए एवं आयुक्त सुश्रीअर्दा अग्रवाल (IAS) प्रेरितकरता है कि हम इस मॉडल को कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव ने कहा- गुजरात की पारंपरिक कलाएं और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं। की खाई पाटने की दिशा में भी सिक्रय हमारे लोगों और समुदायों की पहचान परियोजना का जी आई घटक विशेष में गहराई सेरची-बसी हैं। हस्तकला रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि सितंबर 2020 में छह ज़िलों से सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने कच्छकढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात का नहीं बल्कि शिल्पकारों को आज के पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित

के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में

हस्तकला सेतु योजनाएक समग्र बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी हैं इंडीआईआई में हमें गर्व है कि हम हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक आजीविका का साधन भी बन सकती कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और पारंपरिक कलाओं केसांस्कृतिक और इन शिल्पकारों के इस सफर में सहमागी कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण है।

शिल्पकारों के लिए टिकाऊ





Publication: Jagran Junction

Date: 31 July 2025 Edition: Mumbai

Page: 08

Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award - Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts



MUMBAI| Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award -Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference - 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat

National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.



Publication: APN NEWS Date:31 July 2025 Edition: Online

Link: https://www.apnnews.com/hastkala-setu-yojana-wins-gi-excellence-award-gujarat-chapter-for-

promotion-and-tagging-of-handicrafts/



Ahmedabad: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award – Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural

Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."



Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.